Class Notes **B.A. Geography Part-2, Paper-IV, Unit-III**

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
International Trade

बोलेंद्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल,
राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान

व्यापार एक तृतीय क्रियाकलाप है । व्यापार का मतलब वस्तुओं और सेवाओं के स्वैच्छिक आदान-प्रदान से होता है । व्यापार के लिए दो पक्षों का होना आवश्यक है जिसमें एक बेचता है और दूसरा खरीदना है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार: विभिन्न देशों के बीच उसके सीमा के आर-पार वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान को अंतरराष्ट्रीय व्यापार कहते हैं । यह इसलिए होता है क्योंकि सभी देशों के पास सभी प्रकार की वस्तुएं उत्पन्न नहीं होती हैं या अन्य देशों से उसे कम दाम में खरीदा जा सकता है ।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का इतिहास

प्राचीन काल में यातायात की व्यवस्था उन्नत नहीं थी, इसलिए व्यापार स्थानीय बाजारों में ही होता था । लोग अपने संसाधनों का अधिकांश भाग भोजन और वस्त्र पर खर्च करते थे । हालांकि कुछ धनी व्यक्ति आभूषण और महंगे परिधान खरीदते थे और इसी कारण विलास की वस्तुओं का व्यापार शुरू हुआ । प्राचीन काल में ही रेशम मार्ग जो लगभग 6000 किमी लंबा है, इटली के रोम को चीन से जोड़ता था, इसमें चीन का रेशम और रोम की ओर से उन और बहुमूल्य धातु और महंगी वस्तुओं का परिवहन होता है । रेशम मार्ग भारत, पर्शिया, मध्य एशिया के अनेक स्थानों से होकर गुजरता था और वहां भी व्यापारी व्यापार करते थे । 12वीं और 13वीं शताब्दी में रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात यूरोप में व्यापारी क्रियाकलाप बढ़ गया बाद में बड़े-बड़े युद्धपोत और जलपोतों के विकास के कारण एशिया और यूरोप के बीच व्यापार बढ़ता गया । इसी बीच अमेरिका की खोज हुई । 15 वीं शताब्दी में जब यूरोप में उपनिवेशवाद शुरू हुआ तो दास व्यापार (मानव सभ्यता का एक कलंक है) शुरू हुआ । दास व्यापार जैसे के पुर्तगालियों, डच, स्पेनिश, अंग्रेजों ने अफ्रीका के स्थानीय मूल निवासियों को पकड़कर जबरन उन्हें बागानों में कार्य करने हेतु अमेरिका भेज दिया । यह दास व्यापार लगभग 200 सालों तक चलता रहा जब तक कि 1808 में पूर्णरूपेण समाप्त नहीं हो गया । 19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के बाद पूरे विश्व की आर्थिक व्यवस्था बदल गई अब प्राथमिक क्रिया के द्वारा उत्पादन करने वाले देश महत्वपूर्ण नहीं रह गए । अब यूरोप के औद्योगिक देश प्राथमिक वस्तुओं को खरीद लेते थे और कारखानों में परिष्कृत करके औद्योगिक माल अन्य देशों को बेचते थे । इससे उनका लाभ बहुत अधिक बढ़ गया । प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व व्यापार को नियंत्रित करने के लिए कई संस्थाओं का जन्म हुआ जो बाद में WTO के रूप में सामने आया ।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का अस्तित्व

आज के युग में अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कोई भी देश तब तक नहीं टिक सकता जब तक वह वस्तुओं और सेवाओं का विशिष्टीकरण/विशेषीकरण न करें । मतलब यह है कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार वस्तुओं और सेवाओं के विशिष्टीकरण का परिणाम है । आज विश्व व्यापार विश्व के नए आर्थिक संगठन का आधार है । यह देशों के विदेश नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है ।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार का आधार

(I) संसाधनों में भिन्नता
(II) जनसंख्या कारक
(III) आर्थिक विकास की अवस्था
(IV) विदेश निवेश की सीमा
(V) परिवहन

राष्ट्रीय संसाधनों में भिन्नता

भौगोलिक कारक: किसी भी देश की भौगोलिक संरचना, उच्चावच, मृदा व् जलवायु उसके संसाधनों पर प्रभाव डालती है । भौगोलिक संरचना: ऊंचे पर्वत पर्यटन को बढ़ावा देते हैं ।
निम्न भूमियों: मैदानों में कृषि कार्य की जाती है ।
पठारी प्रदेश: पशु चारण सामान्य बात है ।
भूगर्भिक संरचना: खनिज संसाधन को निर्धारित करती हैं । खनिज संसाधन विश्व के विभिन्न भागों में असमान रूप से वितरित है जो औद्योगिक विकास को आधार प्रदान करती हैं ।
जलवायु: जलवायु किसी भी देश के संसाधन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है । यह जीव-जंतु और वनस्पति की विविधता को सुनिश्चित करती है । जैसे ऊन उत्पादन ठंडे प्रदेशों में ही हो सकता है जबकि कॉफी, रबर, केला आदि गर्म प्रदेशों में ही संभव है ।

जनसंख्या कारक

इसके अंतर्गत सांस्कृतिक कारक और जनसंख्या का आकार आते हैं ।
सांस्कृतिक कारक: इसके अंतर्गत विश्व के विभिन्न भागों की विशिष्ट संस्कृतियों और हस्तशिल्प प्रमुख रूप से आती हैं । जैसे चीन और जापान का रेशमी वस्त्र, चीन का चीनी मिट्टी का बर्तन, ईरान का कालीन, ढाका का मलमल और भारत का सूती वस्त्र पूरे विश्व में सराहा जाता है और अनूठा होने के कारण प्रसिद्ध भी है ।
जनसंख्या का आकार: यदि किसी क्षेत्र की जनसंख्या सघन है तो वहां का व्यापार आंतरिक ही होता है क्योंकि अधिकांश उत्पादित वस्तुएं स्थानीय बाजारों में ही बिक जाती हैं । ऐसे जगहों पर बाह्य व्यापार कम ही देखने को मिलता है । दूसरी ओर जनसंख्या का उच्च जीवन स्तर वस्तुओं के आयात को बढ़ाता है ।

आर्थिक विकास की अवस्था

विभिन्न देशों की विकास की अवस्थाओं से मतलब है कि यदि किसी देश में प्राथमिक क्रियाकलाप अधिक है तो वहां से कृषि के उत्पाद ही निर्यात किए जाते हैं और यह विकसित देशों में औद्योगिक देशों में आयात किए जाते हैं । इसके विपरीत औद्योगिक राष्ट्र अपने यहा उत्पादित कारखानों के मशीन और उससे उत्पन्न वस्तुएं प्राथमिक उत्पादन करने वाले देशों को निर्यात करते हैं ।

विदेशी निवेश की सीमा

अफ्रीका के बहुत से देशों तथा विकासशील देशों के पास खनिज संसाधन प्रकृति ने भरपूर मात्रा में दिया है परंतु वहां पर पूंजी और तकनीक अभी विकसित नहीं हुई है । इसलिए यूरोपीय राष्ट्र या फिर कोई अन्य धनी राष्ट्र वहां पर अपनी पूंजी और तकनीक लगाता है तथा व्यापार में वृद्धि करता है । ये औद्योगिक और विकसित राष्ट्र या तो उन देशों से अपने

यहां कच्चे माल व खनिज संसाधन आयात कर लेते हैं और निर्मित उत्पाद उन्हीं देशों को बाजार मानकर बेच देते हैं । इससे उनको दोहरा लाभ होता है ।

परिवहन

आज हम एक वैश्विक गांव में रह रहे हैं । जहां परिवहन बहुत आसान है । इसके विपरीत प्राचीन काल में जब परिवहन के साधन उन्नत नहीं थे तो व्यापार स्थानीय होता था और सिर्फ रत्न, रेशम तथा मसालों की ही लंबी दूरी व्यापार होते थे । परंतु आज ऐसा नहीं है । आज रेल, समुद्र तथा वायु परिवहन के विकास ने व्यापार को अंतरराष्ट्रीय बना दिया है ।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण पक्ष

अंतरराष्ट्रीय व्यापार के तीन महत्वपूर्ण पक्ष हैं:

(I) परिमाण,

(II) प्रखंडीय संयोजन/ व्यापार संयोजन और

(III) व्यापार की दिशा ।

व्यापार का परिमाण

किसी भी वस्तु की वास्तविक तौल ही उसका परिमाण होता है । परंतु सेवाओं को तौला नहीं जा सकता तो उसका मूल्य ही परिमाण के रूप में माना जाता है ।

विश्व व्यापार : आयत और निर्यात (यु एस मिलियन डॉलर में)

	1955	1965	1975	1985	1995	2005	2010	2018
निर्यात	95000	190000	877000	1954000	5162000	10393000	14850565	18528796
आयात	99000	199000	912000	2015000	5292000	10753000	15076522	18875211

व्यापार संयोजन

विश्व का व्यापार प्रतिदिन अपना स्वरूप बदल रहा है । कहने का मतलब है कि पिछली शताब्दी में प्राथमिक वस्तुओं का व्यापार अधिक हुआ जबकि वर्तमान शताब्दी में विनिर्माण क्षेत्र या औद्योगिक वस्तुओं का उत्पादन अधिक हुआ और साथ ही तृतीयक क्रियाकलाप जैसे कि सेवा क्षेत्र, यात्रा परिवहन तथा अन्य व्यवसायिक सेवाएं आज सर्वाधिक वृद्धि दर्शा रही हैं । इसका मतलब यह है कि विश्व व्यापार में ऊपरीगामी प्रवृत्ति दिख रही है । आज समय भी परिवर्तित हो गया है । पूरे विश्व व्यापार में यूरोप का योगदान घट रहा है जबकि एशियाई देशों का योगदान बढ़ रहा है । इसका मतलब यह है कि यूरोप जो पहले से औद्योगीकृत थाअब वहां से उद्योगों का विस्थापन एशियाई देशों की तरफ हो रहा है और एशिया के देश प्राथमिक क्रियाकलापों से ऊपर उठकर द्वितीयक और तृतीयक क्रियाकलापों में ज्यादा विकास कर पा रहे हैं ।

व्यापार की दिशा

प्राचीन काल में आज के विकासशील देश मूल्यपरक वस्तुओं तथा शिल्प आदि का निर्यात करते थे और यूरोपीय देश उनका आयात करते थे । 19वीं शताब्दी में इस में परिवर्तन हुआ । यूरोपीय देश औद्योगिक वस्तुओं को अपने उपनिवेश से खाद्य पदार्थ तथा कच्चे माल के बदले निर्यात करना शुरू कर दिया । यूरोप तथा अमेरिका बड़े व्यापारिक साझीदार के रूप में उभरे । इन दोनों के बीच औद्योगिक वस्तुओं का व्यापार सबसे अधिक हुआ । जापान भी एक औद्योगिक राष्ट्र

साबित हुआ । बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में पुनः विश्व व्यापार में परिवर्तन हुआ । जब यूरोपीय उपनिवेश समाप्त हो गए तब एशियाई देश जैसे कि भारत, चीन और अन्य विकासशील देशों ने विकसित देशों के साथ प्रतिस्पर्धा शुरू की ।

व्यापार संतुलन

व्यापार संतुलन का अर्थ एक देश के द्वारा अन्य देशों को आयात और निर्यात की गई वस्तुओं की मात्रा का प्रलेखन करना है । यदि आयात का मूल्य निर्यात के मूल्य से अधिक है तो वह देश ऋणात्मक व्यापार संतुलन में है । इसी प्रकार यदि निर्यात का मूल्य आयात की मूल्य से अधिक है तो वह देश धनात्मक व्यापार संतुलन में है । ऋणात्मक व्यापार संतुलन का मतलब कोई भी देश खरीदने के लिए अपनी पूंजी का इस्तेमाल ज्यादा करता है । यह अर्थव्यवस्था के लिए शुभ नहीं होता है ।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रकार

अंतरराष्ट्रीय व्यापार को निम्नलिखित दो प्रकारों में बांटा जा सकता है:

1. द्विपक्षीय व्यापार
2. बहुपक्षीय व्यापार

द्विपक्षीय व्यापार

द्विपक्षीय व्यापार 2 देशों के द्वारा एक दूसरे के साथ किया जाता है । यह दोनों देश आपस में व्यापार सहमति के अनुसार आयात व निर्यात करते हैं ।

बहुपक्षीय व्यापार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इसमें एक देश कई देशों के साथ व्यापार करता है और इसी प्रकार इसमें कोई भी पक्ष नहीं हो पाता है यानी कि कोई भी देश किसी भी देश के साथ व्यापार करने के लिए स्वतंत्र रहता है । हालांकि कई देश अपने व्यापारिक साझेदारों को MFN (Most favoured nation) का दर्जा देते हैं जिसका मतलब होता है सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र ।

मुक्त व्यापार की स्थिति

व्यापार करने हेतु अर्थव्यवस्थाओं को खोलने का कार्य मुक्त व्यापार या व्यापारी उदारीकरण के रूप में जाना जाता है । यह कार्य व्यापारिक अवरोधों जैसे सीमा शुल्क आदि को घटाकर किया जाता है । इससे घरेलू उत्पादों और सेवाओं से प्रतिस्पर्धा करने के लिए व्यापार उदारीकरण सभी स्थानों से वस्तुओं और सेवाओं के लिए अनुमति प्रदान करता है । वैश्वीकरण और मुक्त व्यापार विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए प्रतिकूल साबित हुआ है क्योंकि विकसित देश आसानी से विकासशील देशों में पहुंच बनाकर अपने उत्पादों को उनके यहां डंप कर देते हैं । इससे विकासशील देश को नुकसान पहुंचता है ।

विश्व व्यापार संगठन

यह एक ऐसा अंतरराष्ट्रीय संगठन है जो राष्ट्रों के मध्य वैश्विक नियमों का व्यवहार करता है । यह विश्वव्यापी व्यापार तंत्र के लिए नियमों को नियत करता है और सदस्य देशों के मध्य विवादों का निपटारा करता है । क्रमशः.....

- सन्दर्भ: एन सी ई आर टी, इन्टरनेट

****